JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

अर्वाचीन काव्य में कविशिक्षागत उपमान प्रयोग

डा. वीरेन्द्र कुमार

'काव्य' कवि की प्रतिभा कला से प्रसूत वह लोकोत्तर सृष्टि है जिसका संस्पर्श पाकर प्रत्येक लौकिक पदार्थ अलौकिक बन जाता है उच्चावच विषम पर्वतमाला रमणीय बन जाती है भयानक हिंसक जन्तुओं से व्याप्त, कांटेदार झाडियों के कारण दुर्गमवन प्रदेश भी विहार भूमि बन जाते है, भयानक ध्वनि करके बहने वाली कूलंकषा नदियां कलकल निनादिनी सरिता के रूप में प्रतीत होकर आनन्द की सृष्टि कर बहने लगती है, उत्ताल तरंगों के साथ गर्जन-तर्जन करते हुये तटभूमि पर अहर्निशं ठोकर मारने वाला समुद्र पृथिवी रूपी नायिका को मनाने के लिये उसके चरणों पर बार-बार सिर पटकता हुआ नायक बन जाता है। यह काव्य की ही अलौकिक विशेषता है। यहाँ भिन्न-भिन्न स्वभाव और भिन्न- भिन्न आयु के लोगों के अपने अपने भाव अपनी निजता को छोड़कर सार्वजनीन बन जाते हैं। फ़लतः जो परिस्थितियां सामान्यतः लोक में लज्जा, घृणा, भय अथवा पीड़ा को पैदा करती हैं। वे यहाँ केवल एक ही परिणाम देती हैं एक ही अनुभूति उत्पन्न करती हैं, और वह परिणाम या अनुभूति होती है आनन्द की अनुभूति।

कवि की अनुभूतियों का परिणाम होता है काव्य। काव्य में नायक और नायिका की मुख्य भूमिका होती है। दोनों के सौन्दर्य को कवि कल्पनाओं द्वारा मण्डित करता है। कल्पना से युक्त उक्तियां ही सौन्दर्य की अनुभूति प्रदान करती हैं। नायक और नायिका के अंग प्रत्यंगों भाव-चेष्टा आदि का वर्णन करने के लिये कवि प्रकृति का आश्रय लेता है, अर्थात् कवि प्रकृति से उपमानों को ग्रहण करता है और अपने भावों को अभिव्यक्त करने में सफ़ल होता है। प्रकृति में व्याप्त सौन्दर्य को कल्पनाओं द्वारा नायक नायिका के सौन्दर्य के साथ तादात्म्य स्थापित करके जिस प्रकार के रूपाकार की चित्रमयी योजना की जाती है वही उपमान कहलाती है।

उपमा[1] का अर्थ है तुलना करना। उपमा के प्रमुख तत्त्व उपमान[2] और उपमेय हैं। 'उपमान' का अर्थ है जिससे तुलना की जाये, और 'उपमेय का अर्थ है जिसकी तुलना की जाये। उपमानों का प्रयोग काव्य की प्रत्येक विधा में होता है। कविशिक्षा-परम्परा के आचार्यों में उपमान वर्णन के प्रसंग में सर्वप्रथम स्थान 'अरिसिंह-अमरचन्द्र' का है। उन्होंने अपने कविशिक्षापरक ग्रन्थ 'काव्यकल्पलतावृत्ति' में नारी के लिये प्रयुक्त किये जाने वाले विभिन्न उपमानों का उल्लेख किया है। इनसे पूर्ववर्ती आचार्यों ने अपनें काव्य शास्त्रीय ग्रन्थों में इस दृष्टि से उपमान को चर्चा का विषय नहीं बनाया। परन्तु कुछ परवर्ती आचार्यों ने अपने काव्य शास्त्रीय ग्रन्थों में उपमानों का विशद वर्णन किया। जिनमें देवेश्वर, केशवमिश्र और विनयचन्द्रसुरि प्रमुख हैं। देवेश्वर ने

अपने 'कविकल्पलता' नामक ग्रन्थ में नारी से सम्बन्धित उपमानों की चर्चा की है। सर्वाधिक विस्तृत वर्णन केशवमिश्र का है। जिन्होंने 'अलंकारशेखर' में कवियों के लिये नितान्त उपादेय उपमानों का निरूपण किया है। उक्त सभी ग्रन्थों में निर्दिष्ट उपमान प्रायः पूर्ववर्ती साहित्य में उपलब्ध प्रयोग परम्परा पर ही आधारित है।

आचार्य विनयचन्द्र सूरि ने काव्यशिक्षा नामक कविशिक्षा परक ग्रन्थ में कवियों के लिये उपमा पदों की शिक्षा प्रदान की है। जैसे- क्षमा के लिए तीर्थनाथ, दया एवं दान के लिए बोदिध, विशालत्व के लिए गगन, स्थैर्य के लिए मेरूपर्वत, रूप के लिए मन्मथ, दान के लिए कर्ण, सत्य के लिए युधिष्ठिर, एवं हरिश्चन्द्र इत्यादि, सुरों के लिए कोकिल, कीर्ति के लिए बुध, प्रताप के लिए सूर्य, सौम्य के लिए चन्द्रमा, मति के लिए बृहस्पति, कुसुम कि लिए मालती, कोप के लिए दुर्वासा, भूपति के लिए नैषध, गाम्भीर्य के लिए महोदधि, पुरी के लिए अयोध्या, सरोवर के लिए मानसरोवर, रूप के लिए रति एवं गौरी इन्द्रियों के लिए लोचन, वञ्चन के लिए किराट, वाद्य के लिए वीणा, गुणों के लिए क्षमा, धातु इत्यादि के लिए काञ्चन, नेपथ्य के लिए मुकुट, अलंकारों के लिए उपमापद।[3]

कविशिक्षा परम्परा में निर्दिष्ट उपमानों को मुख्यतः दो भागों में विभाजित किया गया है।

1.स्त्री सम्बद्ध उपमान 2. पुरुष सम्बद्ध उपमान

केशव मिश्र ने 'अलंकारशेखर' में स्त्री के शरीर के कोमलत्व, गौरत्व को अभिव्यञ्जित करने के लिये चन्द्रकला, अम्बुजदाम, शिरीष, विद्युत, तारा, दमनक, काञ्चन यष्टि एवं एवं दीप उपमानों का प्रयोग अपेक्षित माना है। इसके अतिरिक्त शरीर की कान्ति के लिये गोरोचन, स्वर्ण, हरिद्रा, चम्पक, हेम केतक उपमानों का प्रयोग किया है-

"चन्द्रकलाऽम्बुजदाम शिरीषं विद्युत्तारकनकलता च।
दमनककाञ्चनयष्टि दीपसवैंरेभिर्योषिद्वर्ण्या
रोचनास्वर्णविद्युद्भिर्हरिद्राभिर्वराटकैः।
चम्पकैर्हैमकेतक्याःवर्ण्यते तत्तनोतिर्द्युतिः॥"[4]

कवियों ने स्त्री के सौन्दर्य वर्णन में पुरुष सौन्दर्य की अपेक्षा अधिक मनोवेग प्रस्तुत किया है। कवियों ने नारी के बाह्य सौन्दर्य वर्णन में अधिक अभिरुचि दिखायी है। कवियों ने अपनी कृतियों में स्त्री के सौन्दर्य को अभिव्यञ्जित करने के लिये उपमानों की योजना की है।

जानकीजीवनम् महाकाव्य में कवि अभिराज राजेन्द्र मिश्र ने जनकतनया सीता के सौन्दर्य को अभिव्यञ्जित करने के लिये "निजाङ्यष्टि" उपमान को उद्धृत किया है

"सखीवचोभिस्स्वयमात्मशंसिनी कदाचिदादर्शतले विलोक्य सा।
निजाङ्गयष्टिं युवधैर्यलोपिनीं विमन्यमानेव निनिन्दगोपितम्॥"[5]

'अपने रुपसौन्दर्य तथा प्रियतम के विषय में सखियों की बातें सुन-सुनकर आत्मनिरीक्षण करने वाली विदेहनन्दिनी ने किसी समय अपने आप दर्पण तल में युवजनों के धैर्य को लुप्तकर देने वाली अपनी अंगलतिका काया को निहारा और (लज्जावनततावश) उदास होती हुई सी चुपके-चुपके स्वयं को खूब कोसा।'

प्रस्तुत पद्य में कवि द्वारा सीता के अद्भुतसौन्दर्य को प्रदर्शित किया गया है। केशव मिश्र द्वारा कथित स्त्री के लिये यष्टि उपमान को कवि द्वारा यथावत् ग्रहण किया गया है। यष्टि उपमान द्वारा सीता की कृशता द्योतित होती है। अतः सीता के लिए प्रयुक्त उपमान रमणीयता का प्रकाशक बन गया है।

काव्यशाशास्त्रीयों ने स्त्री के केशों को भी उपमानों से मण्डित किया है 'केशवमिश्र' ने अलंकार शेखर में स्त्री के केशों के लिये तम, शैवाल, पाथ बर्ह, भ्रमर, चामर, यमुनावीचि, नीलाश्म, नीलाब्ज, तथा अभ्र उपमानों का प्रयोग करना परम्परा स्वीकार किया है-

"तमः शिवालपाथोदबर्हभ्रमरचामरैः। यमुनावीचिनीलाश्मनीलाब्जाभ्रैः समः कचः॥"[6]

"काव्यकल्पलतावृत्ति" में अमरचन्द्र कवियों को स्त्री के केशों के लिये चामर, नीलकण्ठकलाप, धमिल्ल,विधुतुन्द और वेणी के लिये सर्प और भृङ्गाली जैसे उपमानों को प्रयोग करने की शिक्षा देते हैं।

"वेण्यासर्पासिभृङ्गाल्यः केशपाशस्य चामरः।
नीलकण्ठकलापोऽपि धम्मिलस्य विधुन्तुद॥"[7]

जानकीजीवनम् महाकाव्य में कवि ने जनकतया सीता के केश के सौन्दर्य को अभिव्यञ्जित करने के लिये "नीलवक्रालका" उपमान को उद्धृत किया है-

"तरुणतरणिदीप्तां नीलवक्रालकान्तां निशितकनकभूषां रक्तकौशेयवेषाम्।
त्रिदशयुवतिसौम्यां दिव्यरूपां ददौ तां सपदिजनकजातां राघवायाऽग्निदेवः॥"[8]

तरुण रवि के समान उद्दीप्त, काले एवं घुंघराले केशकुन्तलो वाली, देदीप्यमान सुवर्णाभूषणों से अलंकृत, रक्तवर्ण कौशेय परिधान धारण किये हुई, देवांगनाओं के समान सौम्य तथा दिव्य रूप वाली जनकनन्दिनी को अग्नि देवता ने तत्काल ही राघव को समर्पित कर दिया।

कविशिक्षा परम्परा के अनुसार स्त्री के मुख के लिये इन्दु, अब्ज एवं दर्पण उपमानों का प्रयोग इष्ट है।–

"मुखस्येन्द्वब्जदर्पणाः"।[9]

"वक्त्रस्य शशि पङ्कजदर्पणौ"॥[10]

जानकीजीवनम् महाकाव्य में कवि ने जनकतया सीता के मुख सौन्दर्य को अभिव्यञ्जित करने के लिये "कुवेलम्" (कमल, पंकज) उपमान को उद्धृत किया है

"कुवेलमास्ये करयोश्च पल्लवं जपासुमञ्चापि कपोलमण्डले।
रदच्छदे बिम्बफलं दधद्विधिश्चकार सीतां किमरण्यदेवताम्॥"[11]

मुखमण्डल में कमल, हाथों में पल्लव, कपोलमण्डलों में बन्धूक पुष्प, तथा अधरोष्ठ में बिम्बफल विन्यस्त करते हुये विधाता ने सीता को क्या अरण्य देवता (वनदेवी) बना दिया?

प्रस्तुत पद्य में अभिराज राजेन्द्रमिश्र जी ने उपमानों की झडी लगा दी है। मुखमण्डल को कमल उपमान के द्वारा सजाया, तो हाथों को पल्लव के समान बताया है। कपोलमण्डल को जपा पुष्प के समान बताया है और अधरोष्ठ को बिम्बफल के रुप में उपमित किया है। कवि ने इस प्रकार से उपमित किया है कि सीता मानों अरण्य की देवी प्रतीत हो रही है। इन उपमाओं के

द्वारा सीता का अलौलिक सौन्दर्य उभर कर आता है। कवि अभिराज राजेन्द्रमिश्र ने कविशिक्षा के आचार्यों द्वारा प्रतिपादित मुख के लिये कथित उपमाओं का प्रचूर मात्रा में प्रयोग किया है।

कविशिक्षापरक ग्रन्थों अलंकारशेखर और काव्यकल्पलतावृत्ति में स्त्री के नेत्रों के लिये मृगनयन कोरक, मदिरा, कमलपत्र, झष, खञ्जन, चकोर, केतक, अलि, स्मर एवं शुग आदि उपमानों के प्रयोग को बतलाया है-

दृशोश्चकोरहरिणमदिराः खञ्जनोऽबुजम्। नीलोत्पलं च कुमुदं श्रुतेर्दोला च पाशकः॥[12]

मृगतन्नेत्र पाथोजतत्पत्र झषखञ्जनैः।नेत्रं चकोरतन्नेत्रमेतकालिस्मरशुगैः॥[13]

जानकीजीवनम् महाकाव्य में कवि ने जनकतया सीता नेत्रों के सौन्दर्य को अभिव्यञ्जित करने के लिये "चकोरलोचना" उपमान को उद्धृत किया है

"नितम्बगुर्वीविनतांससौष्ठवा सुमध्यमा चारुचकोरलोचना।

वशागतिशचन्द्रमुखी मिताक्षरा चकर्ष सीरध्वजकन्यका न कम्॥"[14]

नितम्बभार से बोझिल झुके हुये कन्धो की सुन्दरता से युक्त शोभन कटि प्रदेश वाली आकर्षक चकोर सदृश नेत्रों वाली, हस्तिनी के समान मन्द गतिवालि, चन्द्रमुखी तथा मितभाषिणी वैदेही ने किसको नहीं आकृष्ट कर लिया।

निष्कर्ष रूप से कह सक्ते हैं कि जानकीजीवनम् महाकाव्य में स्त्री के शरीर से सम्बन्धित, मुख से सम्बन्धित, नेत्रों से सम्बन्धित एवं केशों से सम्बन्धित उपमानों का प्रयोग दृष्टिगोचर होता है। जिससे कवि की कृति में किये गये कविशिक्षा प्रयोग सैद्धान्तिक रूप से परिपुष्ट होते हैं। कवित्व की कामना करने वाले और उसका अभ्यास करने वालों के लिये ये प्रयोग अवश्य द्रष्टव्य है।

डा. वीरेन्द्र कुमार (इन्चार्ज)
संस्कृत एवं पालि विभाग
पञ्जाबी विश्वविद्यालय पटियाला

सन्दर्भसूची-

1. वामानशिवराम आप्टे कोष पृ-208
2. उपमीयते अनेन इति (वाचस्पत्यम्)
3. क्षमायाम् तीर्थनाथोऽस्तु दयादाने च बोदिध गुरुत्वे गगनं स्थैर्ये मेरु च मन्मथ:।। दाने च बलि-कल्पद्रु-कर्णाद्या: परिकीर्तिता:| (का शि- पृ.-103-104)
4. अलंकारशेखर- पृ-65, केशवमिश्र, चौखम्बा संस्कृत सीरिज, वाराणसी
5. जानकीजीवनम् - 3.30 पृ-30 , अभिराजराजेन्द्रमिश्र वैजयन्त प्रकाशन, इलाहाबाद1988
6, अलंकारशेखर- पृ-65
7. काव्यकल्पलतावृत्ति -136, अरिसिंह अमरचन्द्र, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी,1998
8. जानकीजीवनम् - 8.3पृ-249
9. अलंकारशेखर - 43
10. काव्यकल्पलतावृत्ति.-137
11. जानकीजीवनम्.3.13 पृ.- 26
12. काव्यकल्पलतावृत्ति –पृ. 136
13. अलंकारशेखर - पृ-44
14. जानकीजीवनम् -3.8 पृ.-25